... परिपक्वता की ओर !

परिचय: पुराना हमेशा के लिये चला गया है और एक नए **आप** ने उसका स्थान ले लिया है। अब आप एक मसीही हो और मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने आपको बचाया और अपना बना लिया. जिस किसी भी अनुभव के कारण आप इस अवस्था/मंच तक पहूँचे हो, यह आपके जीवन का एक बढ़िया और महत्वपूर्ण रुपान्तरण है। हमारी यह प्रार्थना है कि आनेवाले सप्ताहों में आपको जो कुछ भी सीखेंगे वह उस अनंन्त रूपान्तरण के पथ पर निरन्तर आपकी मदद करेगा।

अनुक्रमणिका

अध्ययन १ : मती रचित सुसमाचार प्रश्नावली	**०१**
अध्ययन २ : प्रेरितों के काम प्रश्नावली	**०६**
अध्ययन ३ : हमारे लिये परमेश्वर के स्तर	**१०**
अध्ययन ४ : आपके मसीही जीवन के पहले ४० दिन	**१५**

मत्ती रचित सुसमाचार प्रश्न

इन प्रश्नों के आधार पर आप मत्ती रचित सुसमाचार के अध्ययन का उपयोग अपने जीवन में कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इन प्रश्नों का उत्तर आप अपने मन से दें ।

इस पुस्तक में २८ अध्याय हैं। हर अध्याय को कई वचनों में बाँटा गया है। हर अध्याय पर अनेक प्रश्न पूच्छे गए हैं और उनका उत्तर पाने के लिये वचन को 'व' लिखा गया है।

मत्ती रचित सुसमाचार में यीशु के इस धरती के जीवन के बारे में लिखा गया है।

मत्ती एक यहूदी महसूल लेनेवाला व्यक्ति था। ए.डी. ३० में जब यीशु ने प्रचार करना शुरु किया तब से लेकर करीब ३ वर्ष बाद यीशु की मृत्यु तक मत्ती यीशु के साथ था। ए.डी. ३३ में जब कलीसिया की शुरुआत हुई तब यहूदियों में मत्ती पहला व्यक्ति था जो मसीही बना। हम अध्याय ३ से शुरु करेंगे।

अध्याय – ३

व.८ पश्चाताप करने (मन फिराने) का अर्थ क्या है?

व.१० आपके जीवन के कुछ अच्छे फलों के उदाहरण क्या हैं?

अध्याय – ४

व.१ शैतान का वर्णन तुम किस प्रकार करोगे?

व.४ जब यीशु परखे गए तब उन्होंने पवित्र शास्त्र का उपयोग कर शैतान को हराया। जब आप परखे जाते हो, तब क्या करते हो?

व.१९ शिष्य का एक खास उद्देश्य है। **'मनुष्यों के मछुवारे'** होने का अर्थ क्या है?

व.२० जब यीशु ने मछुवारों को अपने पीछे हो लेने को बुलाया, तब मछुवारों ने क्या उत्तर दिया?

अध्याय – ५

व.२१–२२ उन लोगों के नाम लिखो जिनके प्रति तुम्हारे दिल में क्रोध है या फिर अब भी उनके प्रति कडुवाहट है।

व.२८ वासना क्या है?

व.३० वो कौनसे पाप हैं जो आज आपको अपने जीवन से काटकर फेंकना है? (पाप क्या है जानने के लिये **गलातियों ५:१९–२१**, और **२तिमुथियुस १३:१–५** देखें)

अध्याय – ६

व.२० इस पृथ्वी पर तुम्हारा ख़जाना क्या है?

व.२४ कैसे आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा करते हो?

व.३३ परमेश्वर का राज्य क्या है?

अध्याय – ७

व.५ पिछले सप्ताह की ऐसी दो बातों का वर्णन करो जहां आप पाखंडी थे।

व.१३–१४ यदि परमेश्वर सभी से प्रेम करते हैं तो, उन तक पहूँचने का मार्ग संकरा क्यों है?

व.२४ अपना जीवन आपने किन स्तरों पर बनाया है?

अध्याय – ८

व.८ सुबेदार का विश्वास देखकर यीशु क्यों अचम्भित हुए? क्या आपके विश्वास को देखकर भी यीशु अचम्भित होंगे?

व.१८–२२ यीशु अपने चेलों से किस प्रकार का संकल्प चाहते हैं?

अध्याय – ९

व.१२ आप अपने आपको धार्मिक रुप से स्वस्थ समझते हैं या रोगी? क्यों?

व.१६–१७ आपको अपने स्वभाव में क्या बदलाव करना होगा ताकि आप **'नया मशक'** बन सकें?

व.३६ कौनसी बात आपको तकलीफदेय और असहाय महसूस कराती है?

अध्याय – १०

व.१६ अपने बारे में लोगों को सिखाने के लिये जब यीशु ने चेलों को भेजा तब उनसे ये क्यों कहा कि, सांपों की तरह बुध्दिमान और कबूतरों की तरह भोले बनो?

व.३६ यीशु ने कहा कि जब कोई उनके पीछे चलने का निर्णय लेगा तब उसका सबसे अधिक विरोध करने वाले उसके अपने परिवार के लोग ही होंगे। इसका क्या अर्थ है?

अध्याय – ११

व.१२ यीशु क्यों ऐसी भविष्यवाणी करते हैं कि, परमेश्वर के राज्य को बलवान ही छीन लेंगे?

व.२९ यीशु के दो चरित्र हैं, दीनता और कोमलता। क्या आप इनमें यीशु के समान हो?

अध्याय – १२

व.३४–३७ यीशु को आपके मन की बड़ी चिन्ता है। हमारे मन की परिस्थीती हमारे मुँह से निकले शब्दों से झलकती है। आपके मन का न्याय यीशु किस प्रकार करेंगे?

अध्याय – १३

व.१–९ अलग–अलग प्रकार की भूमि अलग–अलग प्रकार के दिल हैं।

व.४: मार्ग का किनारा – परमेश्वर के प्रति एक कठोर मन है।

व.५: पत्थरीली भूमी – यह एक भावुक मन है जो कभी–कभी परमेश्वर के लिये बहुत उत्साहित हो जाता है और दूसरे समयों में भूल जाता है।

व.७: झाड़ियों वाली भूमी – वह मन है जो परमेश्वर को जानना तो चाहता है, परन्तु संसार की चिन्ता और लोगों का डर उसे ऐसा करने से रोकता है।

व.८: अच्छी भूमी – यह ऐसा मन है जो परमेश्वर को जानने में लवलीन है और परमेश्वर को जानने में दूसरों की मदद करना चाहता है। आपका मन किस प्रकार का है? क्यों?

व.१४–१५ इस अनुछेद के अनुसार हमारे मन के साथ क्या कठिनाई है जो हमें पवित्र शास्त्र को समझने से रोकता है?

अध्याय – १४

व.१३–१६ अपने चेलों के साथ चलते समय यीशु उन्हें स्वार्थी न बनने के लिये लगातार चुनौती दे रहे थे। आप किन बातों में स्वार्थी हो?

व.२८–३३ पतरस क्यों डूबने लगा?

अध्याय – १५

व.८–९ आप परमेश्वर का आदर दिल से करने के बजाए अपने होठों से कैसे करते हो?

व.१७–१९ जब यीशु यह कहते हैं कि अशुध्द बातें हमारे दिल से निकलती हैं, तो इसका क्या अर्थ है? यह बातें हमारे दिलों में कैसे जाती हैं।

अध्याय – १६

व.१६ जीवित परमेश्वर का पुत्र – **'मसीह'** होने का क्या अर्थ है? क्या आपको यह विश्वास है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं?

व.२४ कैसे हमें अपने आप का इनकार करना चाहिये?

अध्याय – १७

व.२० चेले सारी सही बातें कर रहे थे लेकिन उनके मन में विश्वास की कमी थी। विश्वास करना क्यों जरुरी है?

अध्याय – १८

व.३ आपको कैसे बदलना होगा, ताकि आपका विश्वास एक बच्चे के समान हो सके?

व.१२–१३ यीशु के पास बाकी की ९९ भेड़ें थीं फिर भी उस एक खोए हुए भेड़ को पाकर यीशु क्यों खुश हुए?

व.३५ अपने दिल से किसी को क्षमा करने का अर्थ क्या है?

अध्याय – १९

व.२९ यीशु के पिछे चलने के लिये हमें कुछ चिजों का त्याग करना पड़ेगा। लेकिन यीशु यहाँ एक प्रतिज्ञा करते हैं। वह प्रतिज्ञा क्या है?

अध्याय – २०

व.१–१२ यीशु कहते हैं कि आप कब स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते हैं यह बात कोई मायने नहीं रखता, आप सभी उतने ही खास हो। क्या आप इससे सहमत हो?

अध्याय – २१

व.२८–३० आप किस पुत्र के समान हो – पहले या दूसरे?

अध्याय – २२

व.१–१० परमेश्वर का राज्य शादी के दावत के समान है। ऐसी दावत में लोग क्यों नहीं आना चाहेंगे?

अध्याय – २३

व.२७–२८ छिपे पाप हमें बाहर से धार्मिक होने के भ्रम में डालते हैं लेकिन भीतर बुराई भरी रहती है। क्या ऐसे कुछ पाप हैं जो आपने किसी को नहीं बताए?

अध्याय – २४

व.१४ 'अन्त आएगा' इसका क्या अर्थ है?

व.४४ तैयार रहने के लिये तुम्हे क्या करना होगा?

अध्याय – २५

व.१–१३ इस दृष्टान्त की मूर्ख या बुध्दिमान कुंवारियों की तरह आप कैसे हैं?

व.२१ अपने गुणों का उपयोग परमेश्वर के लिये आप कैसे करोगे?

अध्याय – २६

व.३६–४५ यीशु को क्यों तीन बार जाकर प्रार्थना करनी पड़ी?

व.७५ पतरस फूट–फूटकर क्यों रोने लगा?

अध्याय – २७

व.२४ पिलातुस ने भीड़ के सामने हाथ क्यों धोए? उसके चरित्र में क्या कमजोरी थी?

व.४६ यीशु को ऐसा क्यों लगा जैसे परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया हो?

अध्याय – २८

व.५–७ पुनरुत्थान (मरे हुओं में से जी उठना) और पुनर्जन्म में क्या अंन्तर है?

व.१८–२० यीशु की आखरी आज्ञा अब हर उस व्यक्ति का उद्देश्य है जो मसीही बनता है। वह आज्ञा क्या है?

प्रेरितों के काम - अध्ययन प्रश्नावली

इन प्रश्नों के आधार पर आप प्रेरितों के काम के अध्ययन का उपयोग अपने जीवन में कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इन प्रश्नों का उत्तर आप अपने मन से दें।

इस पुस्तक में २८ अध्याय हैं। हर अध्याय को कई वचनों में बाँटा गया है। हर अध्याय पर अनेक प्रश्न पूच्छे गए हैं और उनका उत्तर पाने के लिये वचन को 'व' लिखा गया है।

प्रेरितों के काम के लेखक लूका हैं। वह एक डॉक्टर थे और कई मिशनरी (वचनों का प्रचार) यात्राओं में पौलुस के साथ थे। प्रेरित में जो भी घटनाएं घटी उन सभी घटनाओं को जिन्होंने अपनी आंखों से देखा था उनसे पूच्छताछ भी किया है।

लगभग ६८ ए.डी. में रोमियों द्वारा पौलुस और लूका के मारे जाने से पहले करीब ६३ ए.डी. में प्रेरित की किताब लिखी गर्ल।

प्रेरित १

व.७ भविष्यवाणि करने का प्रयत्न करना क्यों गलत है?
व.१३–१४ यीशु के पीच्छे चलने वाले हमेशा क्या किया करते थे?
व.२१–२२ एक प्रेरित किसे कहते हैं?

प्रेरित २

व.३६ इन हजारों लोगों ने यीशु की हत्या की, ऐसा पतरस ने क्यों कहा?
व.४७ कलीसिया इतनी तेजी से क्यों बढ़ रहा था?

प्रेरित ३

व.६ पतरस उसे क्या दे सकता था?
व.१९ पश्चाताप का अर्थ क्या है? पश्चाताप करने के बाद हमें कैसा महसूस होता है?

प्रेरित ४

व.८ पवित्र आत्मा ने पतरस का मदद कैसे किया?
व.१३ पतरस और यूहन्ना इतने साहस से भरे क्यों थे?
व.२३–३० उन्होंने किस चीज के लिये प्रार्थना की?

प्रेरित ५

व.१–११ अनन्याह और सफीरा का पाप क्या था?
व.१७ वे किस कारण जलन रख रहे थे?
व.३४–३९ गमालिएल ने प्रेरितों के बारे में क्या सोचा?

प्रेरित ६

व.११–१३ यहूदियों ने स्तीफनुस के बारे में झूठ क्यों कहा?

प्रेरित ७

व.५१–५३ स्तीफनुस इतना साहसी कैसे बना?
व.५८–६० स्तीफनुस के प्रचार और मृत्यु ने शाऊल (जिसे बाद में पौलुस के नाम से जाना गया प्रेरित १३:९) पर क्या प्रभाव डाला?

प्रेरित ८

व.१२ शीमौन और फिलिप में क्या अन्तर था?
व.१८ हाथों को सिर पर रखकर कौन पवित्र आत्मा का दान दे सकते थे?
व.१९–२० शीमौन की समस्या क्या थी?
व.२६–४० यह आप कैसे कह सकते हैं कि वह खोजा परमेश्वर को खोज रहा था?

प्रेरित ९

व.१–१९ ठीक किस समय पौलुस मसीही बना?
व.१९–२० उन बातों को लिखो जो यह बताते हैं कि पौलुस एक जोशीला जवान मसीही था।
व.२२ लोग इतने चकित क्यों थे?

प्रेरित १०

व.१–२ कॉर्नेलिअस किस प्रकार का व्यक्ति था?
व.२४–२७ आप यहां कॉर्नेलिअस के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रेरित ११

व.२२–२४ अन्तुकिया में पहूँचकर बारनाबास प्रसन्न क्यों था?

प्रेरित १२

व. ५ जब पतरस को गीरफ्तार कीया गया तब मसीहीयों की प्रतिक्रिया क्या थी?
व.२४ कलीसिया पर सताव का क्या प्रभाव पड़ा?

प्रेरित १३

व.४४ पहली शताब्दी के मसीही क्या कलीसिया में बहूत सारे मेहमान लाते थे?

व. ४८–५२ उनके अगुवों को उस क्षेत्र से बाहर नीकाल देने के बावजूद भी मसीही खुश क्यों थे?

प्रेरित १४

व.९ उस व्यक्ति को चंगाई कैसे मिली? इसका उपयोग अपने जीवन में हम कैसे कर सकते हैं?

व.२० यहाँ आप पौलुस के चरित्र के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रेरित १५

व.३८ पौलुस अपने साथ यूहन्ना को क्यों नहीं ले जाना चाहता था?

प्रेरित १६

व.१४ वचन १४ के अनुसार क्या लीदिया एक मसीही थी?

व.३३ जेलर ने जब उनके घावों को धोया, यह उसके बारे में क्या बताता है?

प्रेरित १७

व.५ यहूदी किस कारण जल रहे थे?

व.११ बेरीया के लोगों को **चरित्र में आदर्श** क्यों कहा गया?

व.१६–१८ अथेने किन बातों में हमारे शहर के समान है?

व.२४–२९ परमेश्वर कैसे हैं?

व.३० मूर्ती पूजा के बारे में परमेश्वर को आज कैसा महसूस होता है?

प्रेरित १८

व.६ जब यहूदियों ने पौलुस का विरोध किया तब उसने क्या किया?

व.९–११ यीशु ने पौलुस से क्या कहा? इसके प्रती पौलुस की क्या प्रतिक्रिया थी?

व.१२–१७ गेलिओ किस प्रकार का व्यक्ति था?

व.२६ प्रेसिला और अक्विला ने पौलुस के साथ कैसा बर्ताव किया?

प्रेरित १९

व.८–१० यहाँ आप पौलुस के प्रचार करने से आप क्या सीखते हैं?

व.१८ लोगों ने अपने पाप कबूल क्यों किये?

व.२३–२७ डीमिट्री और उसके दोस्त नाराज़ क्यों थे?

प्रेरित २०

व.२४ पौलुस के बारे में यह हमें क्या बताता है?

प्रेरित २१

व.१३ पौलुस किस प्रकार का शिष्य था?

प्रेरित २२

व.१४–१५ पौलुस का उद्देश्य **(**धर्म–प्रचार**)** क्या था? हमारा उद्देश्य क्या है?

प्रेरित २३

व.१२–१५ यहूदी पौलुस के खिलाफ क्या षड़यंत्र रच रहे थे?

व.१६ उनके षड़यंत्र से पौलुस को कैसे बचाया गया?

प्रेरित २४

व.२४–२७ फिलीक्स किस प्रकार का व्यक्ति था? क्या वह कभी एक मसीही बना?

प्रेरित २५

व.१९ पौलुस ने यीशु के बारे में क्या सीखया?

प्रेरित २६

व.२१ यहूदियों ने पौलुस को जान से मारने का प्रयत्न क्यों किया?

व.२९ किस कारण पौलुस इतने साहसी बने?

प्रेरित २७

व.९–११ पौलुस ने उन्हें क्या सलाह दीया/क्या उन्होंने माना?

व.१३–२१ इसके बाद उन्हें क्या हुआ?

प्रेरित २८

व.७–९ पौलुस पबलीस के पिता के पास क्यों गया? उसका मकसद क्या था?

व.३१ अपने ही घर में बन्द होने पर भी पौलुस ने क्या किया?

हमारे लिये परमेश्वर के स्तर

प्रत्येक रिश्ते और प्रत्येक परिस्थिती में हमें परमेश्वर के वचनों के पालन के द्वारा मसीह के चरित्रों को दर्शाना है।

मुझे क्या करना है ?

मसीह का शिष्य होने के नाते मैं :

१. चाहे मुझे कैसा भी महसूस हो मैं प्रेमपूर्वक उसके वचनों को मानकर पूरे हृदय, मन, आत्मा और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करूँगा/करूँगी (१शमुएल १५:२२–२३, मत्ती २२:३७–४०, यूहन्ना १४:१५, गलातियों ५:१६–१७, १यूहन्ना ५:३ पर आधारित),

२. सिर्फ प्रभु की ही आराधना करूँगा (व्य.वि.६:१३, भजन संहिता २९:२, मत्ती ४:१०) अकेले और दूसरे शीष्यों के साथ मिलकर (प्रेरित २:४२–४६, ५:१२, २०:७, १कुरू.१४:२६, १६:२, कुलु.३:१६, इब्री. १०:२३–२५)

३. देह की सगंती में उपस्थित रहने की आदत डालूँगा/डालूँगी। (इब्री. १०:२३–२५),

४. मनुष्यों का मछुवारा बनूँगा/बनूँगी। (मरकुस १:१७)

५. मसीह के देह की एकता की रक्षा करूँगा/करूँगी (१कुरू. १:१०, १२:२२–२६, इफि. ४:१–३, फिलि. २:१–४),

६. परमेश्वर के वचन पढ़ूँगा/पढ़ूँगी और याद करूँगा/करूँगी (भ.सं.१:१–३, ११९:११, २तिमु. २:१५)

७. सूचनाओं और सुधारों को गम्भीरता से स्वीकार करूँगा/करूँगी (याने मार्गदर्शन लेना) (नी.व. १:२–५, ९:७–९, ११:४, १६:२०, १९:२०, इब्री. १२:५, कुलु. ३:१६, रोमियों १५:१४),

८. दूसरों के लिये उदाहरण बनूगाँ/बनूँगी (मत्ती ५:१६, १कुरू. ११:१, १तिमु. ४:१२),

९. दूसरों को सुधारने में कोमलता से व्यवहार करूँगा/करूँगी। (गल.६:१, २तिमु. २:२४–२६) जो पाप में पड़े हैं उन्हें प्रभु के पास और औरों के पास लौटा लाऊँगा ताकि वह मसीह के देह के लिये उपयोगी ठहरें। (मत्ती १८:१५–२०, लूका १७:३–४, रोमियों १५:१४, गल. ६:१–५),

१०. इम्मानदार और सच्चा रहूँगा/रहूँगी (इफि. ४:१५, २५) और दूसरों की उन्नति हो ऐसा

बोलूँगा/बोलूँगी (इफि. ४:२९, कुलु. ४:६) और श्राप के बदले आशीष दूँगा/दूँगी। (रोमियों १२:४, १ पतरस ३:८–९)

११. शान्ती दूत बनुँगा/बनुँगी और दुसरों के साथ शान्ती से रहूँगा/रहूँगी (मत्ती ५:९, रोमियों १२:१८) और जिसको भी मुझसे कुछ शिकायत है उससे मेल–मिलाप करूँगा/करूँगी। (मत्ती ५:२३–२४)

१२. अपने आपका इन्कार कर दूसरों को अपने से बेहतर जानूँगा/जानूँगी (लूका ९:२३–२५, फिली. २:३–८), और मसीह जैसे उनकी सेवा करूँगा/करूँगी। (मत्ती २०:२६–२८, यूहन्ना १३:१२–१७, इफि. ६:७–८)

१३. मेरा काम स्वयं करूँगा/करूँगी और पूरे मन से करूँगा/करूँगी जैसे प्रभु के लिये कर रहा/रही हूँ (कुलु. ३:२३–२४, १थिस्स. ४:११–१२, २थिस्स. ३:१०–१२)

१४. संयम और अनुशासन का पालन करूँगा/करूँगी (२कुरू. ५:१४–१५, गल. ५:२३, १तिमु ४:७–८)

१५. जिसने भी मेरे विरूद्ध पाप किया है उसे या जो भी मुझसे क्षमा माँगे उसे (प्रभु के साम्हने)पूरे मन से क्षमा करने के लिये तैयार रहूँगा/रहूँगी। (मत्ती १८:२१–२२, ३५ मरकुस ११:२५–२६, लूका १७:३–४)

१६. मेरे हर एक रिश्ते में पवित्र शास्त्रिय प्रेम का उपयोग करूँगा/करूँगी (मत्ती ५:४४, यूहन्ना १३:३३–३४, १३:८,१०, १कुरू.१३:४–८, इफि. ५:२५, तीतुस २:२–४)

१७. सिर्फ उसीसे विवाह करूँगा/करूँगी जो प्रभु से रिश्ता रखता/रखती (१कुरू. ७:३९)

१८. मेरी देह से परमेश्वर का सम्मान करूँगा/करूँगी। (१कुरू. ६:१९–२०)

१९. मैं अपने आपको बैर–भाव, छल, कपट, डाह और हर प्रकार की बदनामी, झगड़ा, डाह, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या, चुगली, अभीमान, बखेड़े, लड़ाई–झगड़े, निन्दा की बातें, बुरे–बुरे शक, सन्देह, व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तीपूजा, टोना, बैर, फूट, विधर्म, मतवालापन, लीला–क्रिड़ा इन समान और भी काम, बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रिगमन, लोभ, दुष्टता, कुदृष्टि और मूर्खता, पुरूषगामी, अन्धेर, असंयम, निर्लज्ञता, मूढ़ता की बातें, गन्दे हंसी मजाक (चुटकुले), दुष्कामना, गालियाँ और झूठ इन सब बातों से दूर रखूँगा/रखूँगी। (१पतरस २:१, २कुरू.१२:२०, १तिमु. ६:४, गल. ५:१९–२०, मरकुस ७:२१–२२, १कुरू. ६:९–१०, मत्ती २३:२३,इफि ५:४, कुलु. ३:५–९)

२०. मेरे पाप परमेश्वर और दूसरे शीष्यों के सामने कबूल करूँगा/करूँगी। (याकूब ५:१६, १यूहन्ना १:९, गीनती ५:५–७, भ.सं. ३२:३–५),

२१. मेरी कमाई का एक हिस्सा (दशमांश) अलग जमा कर उसे खुशी से परमेश्वर के काम के लिये दूँगा/दूँगी (१कुरू. १६:२, २कुरु.९:६–१२),

२२. जरूरतमन्द के साथ बाटूँगा/बाटूँगी । (इफि. ४:२८, १तिमु. ६:१७–१९, याकूब २:१५–१६),

२३. मेरी योग्यताओं, प्रतिभाओं और धार्मिक वरदान का उपयोग परमेश्वर और कलिसीया की बढ़ौतरी के लिये करूँगा/करूँगी। (मत्ती २५:१४–३०, रोमियों १२:३–८, १कुरू १२:७ , इफि ४:११–१२, १५–१६, १पतरस ४:१०–११ पर आधारित),

२४. अपने अगुवों की बात मानूँगा/मानूँगी और उनके अधीन रहूँगा/रहूँगी ताकि उनका काम बोझ नही पर आनन्ददायी बने। (इब्री. १३:१७), और

२५. परीक्षाओं में भी सदा आनन्दित रहूँगा/रहूँगी। (फिली. ४:४, १थिस्स ५:१६, याकूब १:२–४)

एक विश्वासी पती होने के नाते मैं:

१. जैसे मसीह ने कलिसीया से प्रेम किया वैसा प्रेम मैं अपनी पत्नी से करूँगा। (इफि ५:२५–३३)

२. अपनी पत्नी के साथ समझदारी से रहूँगा (१पतरस ३:७) और

३. मेरे परिवार की जरूरतों को पूरा करूँगा (१तिमु. ५:८)

एक विश्वासी पत्नी होने के नाते मैं:

१. मैं अपने पती के लिये एक सही (योग्य) सहायक बनूँगी। (उत्पति २:१८)

२. मेरे पती का आदर करूँगी, प्रेम करूँगी और उसके अधीन रहूँगी। (इफी. ५:२२–२४,३१,३३, तीतुस २:४–५, १पतरस ३:१–६), और

३. मेरे परीवार की जरूरतों का ध्यान रखूँगी। (नि.व.३१:१०–२७, १तिमु. ५:१४, तीतुस २:५)

एक विश्वासी पती/पत्नी होने के नाते हम:

१. एक दूसरे के अधीन रहेंगे (इफि ५:२१) और

२. एक दूसरे के रिश्ते में एकता बनाए रखेंगे। (उत्पति २:२२–२४, मत्ती १९:४–६, इफि ५:३१)।

एक विश्वासी माता–पिता होने के नाते हम:

१. अपने बच्चों को प्रेमपूर्वक शिक्षण, अनुशासन और उदाहरण द्वारा सिखाएंगे (व्य.वि.६:६–९, इफि.६:४, तीतुस २:४)। और

२. अपने बच्चों को उकसाएंगे नही (इफि ६:४)।

एक विश्वासी बच्चा होने के नाते मैं:

१. अपने माता पिता के अधीन रहते हुए उनकी शिक्षाओं को मानूगाँ। (इफि ६:१)

२. अपने माता पिता का आदर करूँगा। (निर्गमन २०:१२, व्य.वि. ५:१६ इफि. ६:२), और

३. अपने माता–पिता की शिक्षाओं को गम्भीरता से सुनूगाँ और याद रखूँगा। (नि.व. १:८–९)

एक विश्वासी नौकर होने के नाते मैं:

१. मेरे मालिक के प्रति आज्ञाकारी और उनके अधीन रहूँगा/रहूँगी। (इफि. ६:५–८, कुलु ३:२२, १ तिमु ६:१–२, तीतुस २:९, १पतरस २:१८ पर आधारित)।

२. मेरे मालिक का आदर करूँगा। करूँगी। (१तिमु ६:१–२), और

३. अपने मालिक के साथ सारे व्यवहारों में आदरपूर्ण रहूँगा / रहूँगी। (१ तिमु ६:२, तीतुस २:१०)

एक विश्वासी मालिक होने के नाते मैं:

१. मेरे नौकरों के प्रति शिष्टतापूर्ण और न्यायपूर्ण बर्ताव करूँगा/करूँगी। (कुलु ४:१) और

२. मेरे नौकरों को धमकाना छोड़ दूँगा/दूँगी। (इफि ६:९)

वचनों द्वारा शिक्षित मीनीस्ट्री का अगुवा होने के नाते में :

१. मुझ पर किये विश्वास में खरा उतरूँगा/उतरूँगी (१तिमु ३:१–१५, तीतुस १:६–९, २:७–८, १ पतरस ५:१–३ पर आधारित) दूसरों को मार्गदर्शन करूँगा/करूँगी, ताकि वो भी दूसरों को सिखा सकें (२ तिमु २:२) और

२. दूसरों को सुधारने (चिताने, शिक्षा देने) में कोमलतासे काम लूँगा/लूँगी, हमेशा इस बात को ध्यान में रखते हुए कि उन्हे फिर से प्रभु के पास लाऊँ। (मती १८:१५–२०, गल ६:१–२, २ तिमु २:२४–२६ पर आधारित)।

आपके मसीही जीवन के पहले चालीस दिन

दिन एक : ''संम्पूर्ण रीती से उद्धार''

यीशु में बपतिस्मा द्वारा परमेश्वर ने आपके लिए जो भी किया है, वह सही में आश्चर्यकारक है।

कुलुस्सियों १:२१–२३

१.आज के पहले, परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता कैसे था ? परमेश्वर को अपना शत्रु बनाने के लिए आपने क्या किया था ?

२. पवित्र/निष्कलंक/निर्दोष रहने का मतलब क्या है ?

३. अपने उद्धार में बने रहने की शर्त क्या है ? (**व.२३**)।

१युहन्ना ३:१–४

१. ''परमेश्वर की संतान'' होने के नाते आपका स्वभाव कैसे होना चाहिए? ''अपने–आपको पवित्र'' बनाए रखने की शुरुवात आप कैसे करेंगे ?

इब्रानियों ९:२४–२८/इब्रानियों १०:१९–२३.

१. यीशु की कुरबानी ने आपके लिये क्या किया है ?

२. सच्चे मन के साथ आप परमेश्वर के समीप कैसे जा सकते हैं ?

भजन संहिता १०३:१–५

१. परमेश्वर ने आपके पापों के साथ क्या किया है ? लिखिये कि परमेश्वर ने आप पर और क्या 'उपकार' किये हैं। (**व. २**)

जीवन में उपयोग : परमेश्वर की स्तुति किजिए और आपके उद्धार के लिए उनका शुक्रिया अदा किजिए। परमेश्वर को एक अहसानभरा पत्र लिखिए।

दिन दो : ''परखा जाना और परीक्षा में पड़ना''

मत्ती ३ : १६–४:११

१. यीशु के बपतिस्मा के बाद उनके साथ क्या हुआ ? आपके बपतिस्मा के बाद आपको किस बात की अपेक्षा करनी चाहिये?

२. परमेश्वर के साथ रिश्ते और यीशु के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में यीशु की क्या परीक्षा हुई ?

३. बपतिस्मा के बाद शैतान ने आपके मन में शक/असुरक्षितता/भय डालकर आपकी किस प्रकार परीक्षा ली ?

४. परीक्षा का सामना करने के लिए यीशु ने पवित्रशास्त्र का कैसे उपयोग किया? पवित्रशास्त्र शैतान के झूठ को बेपरदा कैसे करता है ?

इफीसियों ६:१०–१८

१. आपके खिलाफ शैतान की युक्ती कितनी शक्तिशाली है ?

२. आपको मजबूत रखने के लिए परमेश्वर ने कौनसे आत्मिक हथियार हमें दिये हैं?

३. शैतान का सामना करने के लिए हमारा एकमात्र हथियार क्या है ? (**व.१७**)

जीवन में उपयोग : परीक्षा की इच्छा करो और अपने संघर्षो के बारे में खुले दिल के रहो । आप की परीक्षाओं के बारें में किसी और मसीही को बताइए और साथ में प्रार्थना कीजिये।

दिन तीन : ''बढते हुए जड़''

लूका ८:१३

१. जो नए शिष्य 'जड़' नही पकड़ते हैं, उनका क्या होता है ?

प्रेरितों : २:४१–४७ / प्रेरितों ४:३२–३७

१. ये नए शिष्य किस कारण विश्वास योग्य थे ?

२. क्या आप उन्ही चीजों में लवलीन थे जिसमें वे थे (**२:४२**) ?

३. कलीसिया में आप रिश्तों को गहरा कैसे बना सकते हैं ?

१थिस्सलुनुकियों १:२–१०

१. 'गहरे संकल्प' का अर्थ क्या है ? गहरा संकल्प आप कैसे बढ़ा सकते हैं ?

२. आपको किसकी नकल करनी चाहिये ? किन क्षेत्रों में ? क्या आप दूसरों के लिये एक 'आदर्श' हैं ? कैसे ?

जीवन में उपयोग : इस हफ्ते उन मसीहियों के साथ वक्त बिताइये जिनकी आप नकल कर सकते हैं । जिनको आप प्रोत्साहन दे सकते हैं । जिनसे आप सीख सकते हैं ।

दिन चार : ''प्रार्थना करना सीखना''

लूका : ११:१–३

१. हमें प्रार्थना करना क्यों सीखना चाहिये ? आप किससे सीख रहे हैं ?

२.(**व. २–४**) आप किस प्रकार से परमेश्वर के नाम की स्तुति कर सकते हैं ? क्या आप परमेश्वर के राज्य के लिये प्रार्थना करते हैं ? (ताकि कलीसिया संख्या में बढ़े) ? क्या आप दैनिक जरूरतों के लिये और अपने क्षमा के लिये और दूसरों को क्षमा करने के बारे में प्रार्थना करते हैं ? क्या आप परीक्षाओं का सामना करने के लिये मदद और सुरक्षा के लिये प्रार्थना करते हैं ?

३. वचन **५–१३** में यीशु हमें कौनसी बात समझाना चाहते हैं ? प्रार्थना इस रूप में की जाती है : स्तुती, क्षमा, धन्यवाद और बिनती करना। अगर आप इन चारों में से हर एक विषय के बारे में १० मिनट प्रार्थना करें तो आप कुल मिलाकर ४० मिनट तक शक्तिशाली प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर की सही स्तुति करना भजन संहिता से सीखीये ।

फिलिप्पियों ४:६–७

परमेश्वर हमें किन चीजों के बारे में प्रार्थना करने के लिए कहते हैं ? आज आप किन चिन्ताओं के बारे में प्रार्थना कर सकते हैं ? जब आप प्रार्थना करते हैं तो क्या आपके दिल में शांति उत्पन्न होती है ? विश्वास कीजिये वह आपकी प्रार्थना सुनेंगे ।

जीवन में उपयोग : ऊपर दिया हुआ तरीका (स्तुती, क्षमा, धन्यवाद, बिनती) अपनाकर प्रार्थना कीजिये । आपकी कुछ बिनतियां लिखकर देखिये कि परमेश्वर उनका जवाब कैसे देते हैं ।

दिन पांच : ''परमेश्वर का अनुग्रह''

रोमियों ५:६–११

१. जब यीशु आपके लिये मरे तब आप निर्बल कैसे थे ?

२. आपके जीवन में परमेश्वर का महान प्रेम कैसे साबित होता है?

तिर्तुस ३:३–८, तीतुस २:११–१४

१. हमको हमारा पिछला जीवन याद दिलाना जरूरी क्यों है ?

२. परमेश्वर से क्षमा पाने के लिये आपने क्या किया है ?

३. परमेश्वर के अनुग्रह का जवाब किस प्रकार देना चाहिये ?

४. बताइये कि आप संयम रखकर अच्छे कर्म करने के उत्सुक कैसे बन सकते हैं?

१कुरिन्थियों १५:९–१०/१ तिमुथियुस १:७–१२

पौलुस ने परमेश्वर के उपकार का जवाब कैसे दिया ?

जीवन में उपयोग : तीन चीजें लिखिये (और कीजिये) जो परमेश्वर को यह दिखाएं कि आप उनके दिये हुए उद्धार के प्रती कितने आभारी हैं ?

दिन छ : ''इतना अच्छा कि छुपा नहीं सकते''

२राजा ७:३–११

१.बप्तिसमा के पहले आप इन चार कुष्टरोगियों की तरह भूखे और बिना आशा के कैसे थे

२. परमेश्वर का राज्य कैसे एक अनंत भोजन के समान है ?

३. व.९ में शिष्य बनने के बारे में आप क्या सीखते हैं ? क्या आपका स्वभाव वैसा ही है?

रोमियों १०:१–४/१४–२१

१. क्या आपको लगता है कि पौलुस खोए हुओं की परवाह करता है?

२. परमेश्वर प्रचार करने के लिये किसे भेजते हैं ?

३. क्या सब लोग सुसमाचार का स्वीकार करेंगे ? क्यों ?

४. लोगों का जवाब चाहे कुछ भी क्यों न हो, आपको लगातार सुसमाचार का प्रचार करते रहना आवश्यक क्यों है ?

भजन संहिता ११६: १–१४ परमेश्वर के सारे अच्छाईयों का कर्ज़ आप कैसे चुका सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : यह लक्ष्य तय कीजिये कि आज आप कितने लोगों को प्रचार के द्वारा कलीसिया की सभा में बुलाएंगे। निराश न होने का निर्णय कीजिये।

दिन सात : ''परमेश्वर का परिवार''

मरकुस ३:३१–३३

१. यीशु को अपने शारीरिक और धार्मिक परिवार के बीच में किसी एक को क्यों चुनना पड़ा?

२. वे कौन हैं जो सबसे ज्यादा आपके करीब हैं ? आपको कौनसे चुनाव करने हैं ? क्या परमेश्वर के लोग सचमुच आपका परिवार हैं ?

१पतरस १:२२

१. 'निष्कपट प्रेम' क्या है ? आप दिल की गहराईयों से कैसे किसी से प्रेम करते हैं?

२. कौन है जिससे आपने पहले इस प्रकार का प्रेम किया ? शिष्यों के लिये आपका प्रेम किस प्रकार बढ़ना चाहिये ?

२कुरिन्थियों ५:१६–१७

१.आज से पहले आपने किस प्रकार लोगों को सांसारिक दृष्टिकोन से देखा ?

२. लोगों को सांसारिक दृष्टिकोन से न देखने के लिये आपको किन क्षेत्रों में परिवर्तन करना जरूरी है? (साफ साफ हर एक क्षेत्र के बारे में विचार किजिये)।

१तिमुथियुस ५:१–१२

आपके मिनिस्ट्री में कौन हैं जो आपके धार्मिक 'माता, पिता, भाई और बहन बन सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : इस हफ्ते में आपके मिनिस्ट्री में से दो ऐसे मसीहियों के साथ वक्त बिताने का निर्णय कीजिये, जिनके साथ आपने पहले कभी वक्त न बिताया हो ।

दिन आठ : ''महिमा की आशा''

१ कुरिन्थियों १५:१९

१.यीशु में हमारी आशा इस जीवन के बाद के लिये भी क्यों है ?

२.यदि अनंन्त जीवन नहीं होता तो हम मसीही सब मनुष्यों से अधिक अभागे क्यों होते?

१ कुरिन्थियों १५:४२–५८

१. पौलुस हमें क्या भेद बताते हैं? (**व. ५१**) ?

२. हम मौत से क्यों डरते हैं ? अब हमें मौत से क्यों नही डरना चाहिये ?
३.परमेश्वर के लिये हमें किस प्रकार कार्य करना चाहिये? जब हम अपने आपको सम्पूर्ण रीती से सौंपेंगे तब क्या होगा ?

कुलुस्सियों ३:१–४

१. आप मसीह के साथ कब जिलाए गए ?

२. आज से आपको कौनसी चीजों के बारे में सोचना चाहिये ?

३. कौनसी चीजें हैं जिनके बारे में अधिक सोचना आपको बंद करना चाहिये ?

जीवन में उपयोग : क्षणभर के लिये यह सोचिये कि स्वर्ग कैसा होगा। और स्वर्ग जाने के मौके के लिये प्रतिदिन परमेश्वर का धन्यवाद करना ना भूलें।

दिन नौ : ''अनेक प्रकार की परीक्षाएं''

याकूब १:२–८

१. परमेश्वर हमें परीक्षाओं में क्यों पड़ने देता है ?

२.परीक्षाओं में पड़ने के बारे में आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये ?

३. इस वक्त आपके जीवन में कौनसी परीक्षाएं हैं?

याकूब १:१२–१५

१. हम परीक्षा में स्थीर रहकर खरा कैसे निकल सकते हैं ?

२. परीक्षाएं कहाँ से आती हैं ? कौनसी चीजें आपको परीक्षा में डालती हैं ? क्या अपनी परीक्षाओं के बारे में आपने परमेश्वर को और किसी शिष्य को बताया है ?

१पतरस १:३–९

१. परीक्षाओं में हमको आनंदित और मग्न क्यों रहना चाहिये ?

२. आपका विश्वास सच्चा (असली) है या नहीं यह आप कैसे जान सकते हैं?

३. लिखिये कि आगे बढ़कर किन क्षेत्रों में आपकी परीक्षा हो सकती है ? (पैसे के विषय में, रिश्ते, दबाव आदि) । भविष्य में आनेवाली परीक्षाओं का सामना करने के लिये आप आज ही तैयार कैसे हो सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : आपके जीवन में जो परीक्षाएं हैं उनके बारे में । परीक्षाओं के बारें में आपका स्वभाव कैसा है इस बारे में किसी भी शिष्य से बात किजिये । खुश रहो ।

दिन दस : ''यीशु के जैसे प्रार्थना करना''

मरकुस १:३२–३९

१. प्रार्थना करने के लिये यीशु ने किन चीजों का त्याग किया ? उनके पिछले दिन की सोचो । वह प्रार्थना न करने के लिये कौनसे बहाने बना सकते थे ?

२. प्रार्थना करने की जरूरत आपको कब महसूस होती है ? क्या आप कभी प्रार्थना न करने के बारे में बहाना बनाते हैं ?

३. पिछले १० दिनों में आपके प्रार्थना का समय कैसा रहा ?

इब्रानियों ५:७–१०

१. यीशू का प्रार्थना जीवन कैसे था ?

२. क्रूस पर जाने के अलावा और क्या चीजें थी जिनका पालन करना यीशु के लिये कठीन हो सकता था ?

३. शिष्य होने के नाते कौनसी चीजें आपको कठिन लगती हैं?

४. क्या आप ऊंचे शब्द से पुकार–पुकारकर और आंसू बहा–बहाकर परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह आपको आज्ञा का पालन करने की शक्ति दें ?

५. आपके जीवन के वो कौनसे क्षेत्र हैं जिनके बारे में आपको ज्यादा प्रार्थना करने की आवश्यकता है ? एक विशेष सूचि बनाएं ।

जीवन में उपयोग : आपने जो सूचि बनाई उसके बारे में प्रार्थना कीजिये। विशिष्ट रुप से उन्हीं बातों के लिये प्रार्थना करें। ऊँची आवाज में प्रार्थना करते हुए परमेश्वर से ऐसे बातें करने कि कोशिश कीजिये जैसे कि आप परमेश्वर को देख रहे हों। उनको कहिये कि आपको इन क्षेत्रों के बारे में क्या लगता है, क्या कठिन है, क्यों कठिन है, और आप क्या परिवर्तन कर सकते हैं ?

पिछले दस दिनों के 'जीवन में उपयोग' पर गौर कीजिये । क्या आपने उन सब का पालन किया है?

दिन ग्यारह : 'सच्चाई को थामे रहना'

२तिमुथियुस २:४–१९

१. कुछ लोग वचनों के बारे में झगड़कर अपनी ही वीचारों को फैलाना क्यों पसंद करते हैं ? क्या आप कभी वचनों के बारे में लड़ते हैं ? क्या आपने इसके बारे में किसी और शिष्य से बात की है ?

२.आप स्वयं को परमेश्वर के ग्रहण योग्य कार्यकर्ता बनाने का प्रशिक्षण कैसे दे सकते हैं?

३. क्या आप हाल ही में परमेश्वर के वचनों के बारे में या कलीसिया के बारे में किसी ऐसी चर्चा में शामिल थे जो बेकार या हानीकारक था ? आप इस अशुद्ध बकवास से कैसे बच सकते हो ?

१तिमुथियुस १:१८–२०

१. आप इस अच्छी लड़ाई को कैसे लड़ सकते हैं?

२. एक शिष्य अपने 'विश्वासरूपी जहाज़' को कैसे डूबो देता है ?

३. हुमिनयुस (**२तिमुथियुस २:१७–१८**) और सिकन्दर (**२तिमुथियुस ४:१४–१५**) को याद करो। जो विश्वास से हट जाते हैं उनके जीवन का नतीजा क्या निकलता है ? वे दूसरों को किस प्रकार हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं ?

१तिमुथियुस ४:१५–१६ :

१. क्या आप प्रतिदिन (एक शीष्य होने के नाते) अपने जीवन पर और सिद्धान्तों (पवित्र शास्त्र को समझने)का ध्यान रख रहे हो?

२. क्या किसी ने आपमें कोई परिवर्तन देखा है ?

२तिमुथियुस २:२२–२६

जो आपका विरोध करते हैं उनके प्रति आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये ?

जीवन में उपयोग : पवित्र शास्त्र का सही अर्थ या कलीसिया के बारे में अगर आपका कोई भी प्रश्न हो तो अपने मार्गदर्शक से बात कीजिये।

दिन बारह : 'अच्छे कर्म करना'

इफिसियों २:१०

१. परमेश्वर ने हमें किस कारण बनाया ?

२. आप जो भी अच्छे कर्म कर सकते हैं उनकी सूचि बनाओ।

१पतरस ४:८–११

१. प्रेम अनेक पापों को किस प्रकार ढांप लेता है ?

२. क्या आप दूसरे शिष्यों का अतिथि–सत्कार करते हैं?

३. आप इस क्षेत्र में सुधार कैसे कर सकते हैं ?

४. परमेश्वर के अनुसार हमें दूसरों को क्या देना चाहिये ?

गलातियो ६:९–१०

१. परमेश्वर के अनुसार हमें किस की मदत करनी चाहिये ?

२. आपके पवित्रशास्त्र चर्चा गुट में ऐसा कौन है जिनकी अभी कुछ खास जरूरतें हैं जिन्हें आप पूरा कर सकते हैं ?

जीवन में उपयोग : यदि आप ज़रुरतों को देखते और उन्हें पूरा कर सकते हैं, तो इस सप्ताह कीजिये। यदि आप नहीं जानते कि आप मदद कैसे कर सकते हैं तो, पूच्छीये। याद रखीये : हमें एक दूसरे की जरूरत है । हम एक परिवार हैं।

दिन तेरह : ''सेवा के लिये बचाए गए''

मत्ती २५:३१–४६

१. अंतिम दिन पर किस बात के अनुसार हमारा न्याय होगा ?

२. भिखारियों को सिर्फ पैसे देना क्यों काफी नही है?

३. वचन ३५–३६ में दिये हुए ६ कामों में से हाल ही में आपने कौनसा काम किया ?

४. जब हम गरीबों की परवाह न करें तो हम किसके प्रति लापरवाह बनते हैं?

व्यवस्था विवरण १५:७–१०

१. 'हृदय कठोर करना' और 'मुट्ठी कड़ी' करने का अर्थ क्या है ?

२. परमेश्वर आपसे किस प्रकार का दान चाहते हैं?

३. आपके आसपास कौन है जो गरीब और ज़रुरतमन्द हैं और आप उनकी मदत कैसे क र सकते हैं ?

मत्ती १०:४७

१. कौनसी छोटी–छोटी चीजें हैं जो आपने दूसरों के लिये की और जिन्हें परमेश्वर कभी नहीं भूलेंगे ?

२. कम पैसे होने के बावजूद भी आप ज़रुरतमन्दों की मदत कैसे कर सकते हैं?

याकूब १:२७

१. परमेश्वर की नजर में सची भक्ति क्या है ?

२. परमेश्वर खास करके किसकी ज्यादा परवाह करते हैं?

जीवन में उपयोग : आज आप किसकी मदत कर सकते हैं ? किसी और शिष्य से मिलकर गरीबों की मदत करने की योजना बनाइये ।

दिन चौदह : 'एक नई सृष्टि'

२ कुरिन्थियों ५:१७

१. आपके जीवन की 'पूरानी बातें' जो बीत गई क्या हैं ?

२. आपकी कौनसी चीजें 'नई' हो गई हैं ?

मरकुस २:२१,२२

१. आपको कितना नया बनना चाहिये ?

२. नई आदतें अपनाने में और अंदर से परिवर्तन करने में क्या फर्क है ? क्या आपका जीवन दाखरस की पूरानी मशकों के समान है या नए मशकों के समान ? क्यों ?

रोमियों १२:२

१. आपके जीवन में संसारिक विचारों के उदाहरण क्या हैं ?

२. आप अपने सोचने के ढंग को कैसे बदल सकते हैं ?

इफिसीयों ४:१७ – ५:२

१. आपके पुराने जीवन के चाल चलन और वीचारों के बारे में परमेश्वर क्या कहते हैं?

२. आपकी सृष्टि किसके अनुसार की गई ? एक दूसरे को क्षमा करते रहना आवश्यक क्यों है ?

३. प्रेम का जीवन जीने का अर्थ क्या है ?

जीवन में उपयोग : आपके मार्गदर्शक या करीबी शिष्य से पूच्छिये कि वे आपमें कौनसे सांसारिक स्वभाव या आदतें देखते हैं?

दिन पंद्रह : ''स्वर्ग की आशा''

प्रकाशितवाक्य २०:११–१५

१. सोचिये कि न्याय का दिन कैसा होगा ? वहाँ कौन–कौन रहेगा?

२. सब को कैसे महसूस होगा ?

प्रकाशितवाक्य २१:१–८

१. मसीह की दुल्हन कौन है?

२. स्वर्ग का वर्णन कीजिये।

३. वचन ८ के अनुसार अपने आप को जांचीये। क्या इनमें से कोई भी पाप आपके जीवन में है ?

प्रकाशितवाक्य २२:१–६

१. स्वर्ग में और कौन से अनन्त आनंद होंगे ?

२. परमेश्वर के अनुसार हमें यह जानना जरूरी क्यों है कि 'ये बातें विश्वास के योग्य और सत्य हैं ?

प्रकाशितवाक्य २२:१४–१५

१. क्या इनमें से कोई भी पाप आपके जीवन में है ?

जीवन में उपयोग : स्वर्ग के परमेश्वर के वचनों के बारे में प्रार्थना कीजिये । यदि कोई पाप है जिसे कबूल करके परिवर्तन करने की आवश्यक्ता है; तो आज ही कीजिये।

दिन सोलह : 'दूसरों को बचाने के लिये बचाए गए''

१ पतरस २:८–१०

१. 'राज–पदधारी याजक' बनने का मतलब क्या है?

२. आपको कौनसा संदेश बांटना चाहिये ?

३. क्या आप सचमुच परमेश्वर की महीमा प्रकट कर रहे हैं या लोगों को सिर्फ न्योता दे रहे हैं?

२ कुरिन्थियों ५:१४–२१

१. आप यह कैसे कह सकते हैं कि आप अपने लिये जी रहे हैं या यीशु के लिये ?

२. मसीह के राजदूत बनने का मतलब क्या है?

३. जिस प्रकार आप यीशु का प्रतीनिधित्व कर रहे हैं, क्या यीशु उससे खुश होंगे ?

४. लोगों को **'समझाना'** और उनसे **'निवेदन'** करने का मतलब क्या है ?

५. खोए हुओं के प्रति आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

प्रेरित १७:१६–३४

१. पौलुस दुखी क्यों थे ?

२.आपके शहर के कौनसे दृश्य देखकर आपको दुखी होना चाहिये ?

३. पौलुस ने अपना विश्वास कहाँ बाँटा ?

४. पौलुस ने अपने संदेश के शुरूवात में अथेने के लोगों की धार्मिकता की तारीफ क्यों की ?

५. धार्मिक लोगों से बात करने के बारे में, यह आपको क्या सीखाता है? (चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हों?)

६. पौलुस के संदेश का लोगों ने क्या जवाब दिया ?

जीवन में उपयोग : इस अभ्यास से आपने प्रचार के बारे में क्या सीखा, कम से कम चार बातें लिखो। अगली बार प्रचार करते समय इन बातों को ध्यान में रखकर प्रचार करें।

दिन सतरह : 'ध्यान वीचलित होना या लवलीन रहना'

लूका १०:३८–४२

१. मार्था का ध्यान दूसरी बातों में कैसे खो गया ?

२. उसे कैसा महसूस हो रहा था?

३. इस हफ्ते में किन बातों में आपने आपना ध्यान खोने दिया ?

४. आप ज़्यादा मार्था के जैसे हैं या मरियम के जैसे ?

५. मरियम ने क्या चुना ?

६. यह अच्छा क्यों है ?

लूका ८:१४

१. 'फंस' जाने का मतलब क्या है ?

२. इसका नतीजा क्या होता है ?

३. कौनसी चिन्ताएँ, पैसा, काम, व्यापार, या शौक हैं जो परमेश्वर में और अधिक बढ़ने से आपको रोक रहे हैं?

लूका १२: ३५–४०

१. आपको यीशु के लिये सतर्क और तैयार क्यों रहना है?

२. जब हमारा ध्यान हमारे मकसद से हटकर दूसरी चीजों पर जाता है तो यीशु को कैसे महसूस होता है ?

जीवन में उपयोग : अगर आपका ध्यान मतलब की चीजों से हट गया है और आप वक्त बरबाद करने लगे हैं तो एक कागज पर लिखिये कि आप प्रतिदिन (सुबह से शाम तक) क्या करेंगे ? किसी और शिष्य की सहाय्यता लेकर लिखें।

दिन अठारह : ''दूसरों से सीखना''

मत्ती १८:१–४

१. हमारा किस प्रकारका हृदय होने पर परमेश्वर हमसे खुश रहेंगे ?

२. बच्चों के किन गुणों की हमें नकल करनी चाहिये?

१थिस्सुलूनीकियों ५:१२–१४

१. परमेश्वर में आपके अगुवे कौन हैं ?

२. क्या आपके अगुवे उम्र और शिक्षण के आधार पर चुने जाते हैं ?

३.उन मसीहीयों के नाम लिखिये जो कड़ी मेहनत करते हैं, एक उदाहरण हैं और जो आपको परामर्श देते हैं।

४. क्या आप उनका आदर करते हैं?

५. किस प्रकार के शिष्यों को खास मदद की जरूरत है (**व. १४**)?

६. क्या आपको इनमें से किसी भी समस्या के बारे में परामर्श मिला है ?

भजन संहिता ११९:९९–१००

१. सच्ची समझ हमें किस प्रकार मिलती है?

२. वचन १०० हमारे समाज के विचारों के विरूध्द कैसे है ?

३. जब कोई भी शिष्य जो उम्र में आप से कम है और आपको शिक्षा/मार्गदर्शन/सुधार देता है तो आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

१तिमुथियुस ४:११–१२

१. परमेश्वर जवान अगुवों से क्या इच्छा रखते हैं?

भजन संहिता ३२:८–१०

१. आप घोड़े और खच्चर के समान बनने से कैसे बच सकते हैं?

जीवन में उपयोग : यदि आपने आपसे कम उम्र के शिष्यों से शिक्षा लेने से इंन्कार किया था तो, आज ही पश्चाताप कीजिये और उनको ढूंढकर उनसे प्रश्न पूच्छिये। अगर आप खुद कम उम्र के शिष्य हैं तो दूसरे मसीहीयों के लिये एक महान आदर्श बनीये।

दिन उन्नीस : 'शक्तिशाली प्रार्थना'

१ इतिहास १७:१५–२२

१. जब दाऊद प्रार्थना कर रहे थे तब उन्हें कैसा महसूस हो रहा था? क्यों?

२. परमेश्वर ने किस प्रकार आपको वह आदर और आशिष दिया जिनके आप अयोग्य थे?

३. परमेश्वर ने इस्त्राएल को कैसे आशिष दिया?

४. उन्होंने आज के युग में अपने लोगों के लिये इनसे भी बढ़कर कार्य कैसे किये ?

५. यह प्रार्थना परमेश्वर के बारे में कौनसा स्वभाव प्रकट करता है ?

उत्पत्ति २४:१०–२७

१. आपको क्या लगता है,परमेश्वर ने यह प्रार्थना इतनी जल्दी क्यों सुन ली?

२. इस सेवक की प्रार्थना बहुत साधारण थी, लेकिन उसका विश्वास बहुत मजबूत था। आप यह कैसे कह सकते हैं ?

३. जब परमेश्वर ने सेवक की प्रार्थना का उत्तर दिया तब सेवक का पहला जवाब क्या था?

४. हर एक उत्तर किये हुए प्रार्थना के बारे में क्या आप परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं ?

याकूब ५:१५–१८

१. कौनसी चीज प्रार्थना को शक्तिशाली और असरदार बनाती है?

२.क्या आप उत्सुकता और सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं ?

३. क्या आप बड़े विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं? क्या इस हफ्ते आप धार्मिकता के साथ जीए।

जीवन में उपयोग : आज परमेश्वर से कुछ खास क्षेत्रों के बारे में प्रार्थना कीजिये। विश्वास और एहसान की भावना के साथ प्रार्थना कीजिये।

दिन बीस : 'संसार द्वारा परीक्षा में पड़ना'

भजन संहिता ७३:१–१४

१. जब लेखक ने अपने आस–पास धनवान और खोए हुए लोगों को देखा तो उन्हें कैसा महसूस हुआ ?

२. उसे जीवन अन्यायपूर्ण क्यों लगा?

३. किस प्रकार आपने इस दुनिया के लोगों से ईर्ष्या की या जले ?

४. क्या मसीही बनने के बाद आपके मन में इस विषय में संघर्ष हुआ? क्या आपने इसके बारे में किसी से बात की ?

भजन संहिता ७३:१५–२२

१. अपने जीवन के नतीजे के बारे में उन्होंने क्या सोचा?

२. यह 'अच्छा जीवन' एक सपने की तरह कैसे है जो न्याय के दिन मिट जाएगा ?

३. उनसे ईर्ष्या करते समय लेखक की सोच कैसी थी ?

भजन संहिता ७३:२३–२८

१. परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के बारे में लेखक क्या समझ पाया?

२. वचन २५–२६ याद कीजिये

।

यूहन्ना २:१५–१७

१. इस दुनिया की किन चीजों से हमें नफरत करना चाहिये?

२. कौन सी संसारिक वस्तुएँ हैं जो आपको अब भी अपनी ओर आकर्षित करती हैं?

जीवन में उपयोग : मार्गदर्शक से बात कीजिये कि आपको दुनिया के बारे में क्या लगता है? कौनसी चीज आपको अपनी ओर आकर्षित करती है? उसके बारे में प्रार्थना कीजिये।

दिन इक्कीस : 'परीक्षाओं में आनंदित रहो'

मत्ती ५:१०–११

१. कौनसी बात के कारण हमको परीक्षाओं में आनंदित होना चाहिये?

२. क्या यीशु के कारण लोगों ने आपका अपमान किया या आपके बारे में बुरा–भला कहा है?

३. आपको कैसे महसूस हुआ?

४. और कौन है जिनको आपके समान सताया गया?

यूहन्ना १५:१८–२३

१. दूसरों से हमें किस प्रकार के बर्ताव की अपेक्षा रखनी चाहिये ?

२. दुनिया हमसे नफरत क्यों करती है?

३. जब हम शिष्य बनते हैं तो लोगों के दिल में दोष क्यों पैदा होता है ?

प्रेरितों ४:१३–२२

१. पतरस और युहन्ना इतने साहसी क्यों थे?

२. क्या किसी ने आपको यीशु की शिक्षा पाने, उनके बारे में बोलने या उनकी आराधना करने से रोका है?

३. आपका जवाब क्या था?

प्रेरितों ५:१७–२९

१. डाह के कारण यीशु को सताया गया (मरकुस १५:१०), जलन के कारण प्रेरितों को गिरफ्तार किया गया।

२. हमको किस कारण सतया जाएगा?

३. कौन हमें सता सकता है?

४. जब प्रेरितों को सुसमाचार का प्रचार रोकने के लिए कहा गया तो उनका जवाब क्या था?

प्रेरितों ५:४०–४२

१. प्रेरित खुश क्यों थे ?

जीवन में उपयोग : वचन ४२ का पालन आज और सदा के लिये कीजिये।

दिन बावीस : 'देकर जीना'

यूहन्ना१३:१–१७

१. यीशु ने सम्पूर्ण रीती से अपना प्रेम कैसे जताया ?

२. वह अपने शिष्यों को क्या सिखाना चाहते थे ?

३. हम **व.१७** का पालन कैसे कर सकते हैं?

४. खास करके किन क्षेत्रों में?

प्रेरितों ९:३६–४२

१. सब लोग दोरकास से क्यों प्रेम करते थे?

२. उनके खास दोस्त कौन थे?

३. दोरकास ने उनके लिये इतना कुछ क्यों किया ?

४. अगर आप आज मरें तो आप किस चीज के लिये याद किये जाओगे ?

५. हम दोरकास के जीवन से क्या सीख सकते हैं?

फिलिप्पियों २:१९–२४

१. तिमुथियुस दूसरों से अलग क्यों थे ?

२. दूसरों की भलाई में उनकी सचमुच में दिलचस्पी थी यह बात कैसे साबित होती है?

३. हम कैसे अधिक से अधिक तिमुथियुस की तरह बन सकते हैं?

जीवन में उपयोग : एक ऐसा तरीका सोचो जिससे आप एक शिष्य को यह बता सकें कि आप सच में उसकी परवाह करते हैं। आज ही करें।

दिन तेवीस : ''पाप कबूल करना''

भजन संहिता ३२:१–७

१. जब हम अपने पापों को छुपाते/कबूल नहीं करते तब हमें कैसा महसूस होता है?

२. क्या आपको बपतिस्मा के बाद कभी ऐसा महसुस हुआ ? क्या ऐसा कोई भी पाप है जिसे बताने से आप डरते हैं ?

नीतिवचन २८:१३

१. क्या हम हमारे पाप परमेश्वर से छुपा सकते हैं ?

२. परमेश्वर के अलावा हमें और किसके पास हमारे पाप कबूल करने चाहिये ?

३. छुपाए हुए पापों का हमारे जीवन पर क्या असर पड़ सकता है ?

लूका ८:१७

१. पाप को छुपाना मूर्खता क्यों है?

भजन संहिता ६६:१८–१९

पाप को छुपाने या मन में संजो कर रखने से और क्या होता है ?

जीवन में उपयोग : कुछ वक्त निकालकर सोचिये: क्या ऐसा कोई भी पाप, बुरा स्वभाव , कर्म या विचार है जो आपको बेचैन कर रहा है क्योंकि आपने किसी को भी इस बारे में नहीं बताया ? उन्हें लिखिये और आज ही इसके बारे में बात कीजिये ।

दिन चौबीस : 'पारीवारिक दबाव'

मरकुस ३:२०–२१

१. यीशु का परिवार उनसे नाराज क्यों था?

२. क्या आपके परिवार में किसी ने आपको परमेश्वर की सेवा करने से इसलिये रोकना चाहा क्योंकि वे समझते हैं कि आप स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं?

३. क्या होता अगर यीशु उनकी बात सुनते?

यूहन्ना ७:१–९

१.यीशु के अपने भाईयों ने उनके बारे में क्या सोचा?

२. यीशु अपने परिवार की इच्छाओं पर क्यों नही चले?

मत्ती १०:३७–३९

१. कुछ उदाहरण या तरीके लिखिये जीनके कारण हम अपने परिवार को यीशु से भी ज्यादा प्रेम कर सकते हैं?

२. अगर कोई आपके जीवन को देखे तो वह क्या कहेंगे, कि आप किससे ज़्यादा प्रेम कर रहे हैं?

जीवन में उपयोग : आपके परीवार की अपेक्षाओं के कारण जो पारीवारिक दबाव आप पर पड़ रहा है इस बारे में किसी मजबूत शिष्य से चर्चा कीजिये । क्या आपको कोई परिवर्तन करना है?

दिन पच्चीस : 'खुले दिल का रहना'

यूहन्ना १५:१६

१. यीशु ने अपने शिष्यों को क्या बताया ?

२. क्या आप दूसरे मसीहीयों के लिये एक ऐसे मित्र हैं?

३. क्या वे सचमुच आपके जीवन के बारे में सब कुछ जानते हैं?

२कुरिन्थियों ६:११–१३

१. खुलकर बातें करने का अर्थ क्या है?

२. क्या आप अपने दिल को खोलकर दूसरों से बातें करते हैं?

३. वो कौनसी भावनाएँ हैं जो आप लोगों से छुपाते हैं?

नितिवचन २०:५

१. अपनी हर बात को खुलकर बताकर क्या आप दूसरों को आपका मार्गदर्शन करने में मदद करते हैं या फिर आपके दिल की बातें खोद–खोदकर निकालनी पड़ती हैं?

जीवन में उपयोग : आपके जीवन की उन बातों को लिखिये, जैसे भावनाएं, योजनाएं, पाप, जो आपने दूसरों से छुपा रखी थीं और किसी मसीही के साथ इस सप्ताह इन बातों पर चर्चा करो। खुले रहो।

पिछले १० दिनों के अभ्यास पर गौर कीजिये। क्या आप उनका पालन कर रहे हैं? कौनसी बातों के बारे में आप को अब भी खुला होना बाकी है। किसी शिष्य के साथ आज समय बिताईये।

दिन छब्बीस : ''शक को दूर करना''

मत्ती ११:१-६

१. यह जानकर भी कि यीशु सच्चे हैं यूहन्ना बपतिस्मादाता के मन में संदेह क्यों हुआ?

२. इस शक का हल निकालने के लिये यूहन्ना ने क्या किया?

३. जब आपके मन में शक पैदा हो तो आपको क्या करना चाहिये?

मत्ती १०:१६-१७

क्या यह बात आपको आश्चर्य चकित कर देती है? पढ़कर देखिये कि यीशु ने अपने शक्की शिष्यों को क्या करने को कहा ?

१कुरिन्थियों १५:११-१४

१. कुरिन्थ के मसीहीयों के मन में क्या शक था? पहले उन्होंने विश्वास किया लेकिन बादमें वे शक करने लगे।

२. कौन सी शिक्षाएँ हैं जिनपर आपने पहले विश्वास किया और बाद में आपको शक हुआ?

लूका २४:३१-४५

१. शक कहाँ से आते हैं?

२. यीशु ने उनका विश्वास बढ़ाने के लिये क्या किया ?

जीवन में उपयोग : लिखिये कि खुले दिल का रहकर वचनों, प्रार्थना और आज्ञा पालन द्वारा आप शक को कैसे मिटा सकते हैं?

दिन सत्तावीस : ''विश्वास योग्य बनने की शिक्षा''

पहिले, विश्वास योग्य रहने का अर्थ क्या है ?

१कुरिन्थियों १३:४–७

१. इन शास्त्रों में प्रेम शब्द के बजाय आपका नाम लिखिये और वापस पढ़िये और पढ़ते समय आपके कुछ खास रिश्तों के बारे में सोचिये।

२. आपकी नजर में आपको क्या परिवर्तन करना चाहिये?

इफिसियों ४:२९

१. कैसी बातें दूसरों को हानि पहुंचा सकती है?

२. क्या आप ने किसी के साथ क्रूरता से या निन्दा से बातें की हैं?

१थिस्सलुनीकियों ५:१२–१५

१. प्रभु में आपके 'अगुवे' कौन हैं?

२. क्या आपके अगुवे उनके जीवन के आधार पर चुने जाते हैं?

३. कुछ मसीहीयों के नाम लिखिये जो बहुत परिश्रम करते हैं ? क्या आप दिल से उनका आदर करते हैं?

४. जो मसीही कमजोर और सीखने में धीमे हैं उनके बारे में आपका स्वभाव कैसा है?

जीवन में उपयोग : जिनका आप आदर करते हैं और जो प्रभु में आपके अगुवे हैं उनमें से एक को एक सराहना भरा पत्र लिखिये। एक ऐसे शिष्य, को भी लिखिये जिनको प्रोत्साहन की जरूरत है।

दिन अठावीस : ''वाद–विवाद की बातें''

रोमियों १४:१–८

१. आज मसीहीयों के बीच में कुछ वाद–विवाद की बातें क्या है? (पहनावा, कपड़े, संगीत, खाद्य पदार्थ आदि)

२. जो लोग इन बातों को अलग नजर से देखते हैं उनके प्रति आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

रोमियों १४:१६–२३

१. सबसे ज्यादा परमेश्वर किन बातों पर ध्यान देते हैं?

२. क्या आप ऐसा कोई काम कर रहे हैं जो दूसरों के लिये ठोकर का कारण बन सकता है?

३.वचन **२३** का अर्थ क्या है?

४. क्या आप अपने आज के जीने के ढंग से खुश हैं?

१तिमुथियुस २:९–१०, १पतरस ३:३

१. कौनसी चीज एक स्त्री को परमेश्वर की नजर में सुन्दर बनाती है? अपने ही शब्दों में यह लिखिये कि यह शास्त्र पहनावा और धार्मिकता के बारे में हमें क्या सिखाते हैं?

मत्ती ११:१८–१९

१. लोगों ने यीशु और यूहन्ना बपतिस्मादाता की निन्दा क्यों की?

२. वे एक दूसरे से इतने अलग थे फिर भी परमेश्वर उनसे प्रसन्न क्यों थे?

जीवन में उपयोग : मसीहीयों के लिये क्या सही और क्या गलत है, इसके बारे में क्या आपके कोई प्रशन हैं? किसी भी मजबूत शिष्य से पूछिये कि क्या ये बातें विवादपूर्ण हैं और अपने आप एक निर्णय बनाईये ।

दिन उनतीस : ''यीशु जल्दी वापस आएंगे''

२पतरस ३:३–१४

१. कुछ लोग यीशु के वापस आने की बात का उपहास/मज़ाक क्यों उड़ाते हैं?

२. ''प्रभु का दिन'' कैसा होगा?

३. क्या आप ऐसे जी रहे हैं जैसे कि यीशु **आज ही** वापस आ सकते हैं?

१थिस्सुलुनिकियों ४:१३–१८

१. इस शास्त्र की तुलना **२पतरस ३:७–१०** से कीजिये। जो प्रभु से मिलने के लिये तैयार नही हैं क्या उनके लिये एक **दूसरा मौका** होगा?

२. यह दिन एक **रात के चोर के समान** क्यों आएगा?

३. जागते रहने और संयम रखने का अर्थ क्या है?

२तिमुथियुस ४:६–८

१. न्याय के दिन प्रभु का सामना करने के बारे में पौलुस के क्या विचार हैं?

२. यीशु के लिये जीवन बिताना, अच्छी कुश्ती लड़ने, दौड़ पूरी करने और विश्वासी की रखवाली करने/विश्वासी बने रहने के समान क्यों है?

३. अंत तक ऐसा जीवन जीने के लिये आपको कौनसे प्रयत्न करने पड़ेंगे?

जीवन में उपयोग : हर दिन ऐसे जीवन बिताओ जैसे कि वह आपका आखरी दिन हो।

दिन तीस : ''प्रेम में एक साथ बंधे रहना''

भजन संहिता १३३:१–३

१. एकता क्या है और कलीसिया में एकता बनाए रखना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

इफिसियों ४:१–३

१. अपने शब्दों में **वचन २** को समझाइये । जब हम इसके विपरीत बर्ताव करें तो क्या होता है?

२. एकता रखने के लिये हमको सम्पूर्ण प्रयत्न क्यों करना चाहिये?

फिलिप्पियों २:१–५

१. एक मन, एक चित्त और एक लक्ष्य होने का अर्थ क्या है?

२. आप दूसरों को स्वयं से अच्छा कैसे समझेंगे?

३. आप अपने हित के अलावा और किस के जीवन की परवाह कर रहे हैं? यीशु का स्वभाव कैसा था? क्या आपका भी वैसा ही है?

मत्ती १८:१५–१७ / ५:२३–२४

१. एक दूसरे के बीच झगड़े और विचारों में फर्क मिटाने के लिये यीशु हमें क्या सलाह देते हैं?

२. किसे किसके पास पहले जाना चाहिये?

३. क्या कलीसिया में कोई है जिसके पास जाकर आपको अपनी समस्याएं/ झगड़े मिटाने हैं?

जीवन में उपयोग : आज आपके रीश्तों के बारे में सोचिये। प्रार्थना कीजिये कि आप अपने सब भाई बहनों के साथ एकता से रहेंगे और जैसे यीशु उनके साथ समय बिताते उसी तरह उनके साथ समय बिताइये, जिनके साथ आपका अच्छा रिश्ता नही है।

दिन इकतीस : ''निराशा को मिटाना''

नबी एलीयाह ने हाल ही में परमेश्वर द्वारा कुछ महान सफलताओं का अनुभव लिया था। ४५० झूठे नबियों का नाश होना और साढ़े तीन सालों के बाद पहली वर्षा होना उनके सच्चे प्रार्थनाओं का फल था। (याकूब ५:१७–१८ पढ़ें)। लेकिन उसके बाद वे ड़र गए और उदास हो गए।

१राजा १९:१–८

१. एलीयाह इतने व्याकुल क्यों थे?

२. वो कौनसी बातें हैं जिसने आपको हिम्मत हारने पर मजबूर किया ?

३. परमेश्वर ने उसे शारीरिक, मानसिक और धार्मिक क्षेत्रों में कैसे प्रोत्साहन दिया?

४. जब भी आप उदास हो जाते हैं तब सामान्यत: आप क्या करते हैं?

५. अगली बार जब आप उदासी के कारण पीछे हटने की सोचें तब इन ३सबक/सीख को अपनाकर आप आगे कैसे बढ़ेंगे?

१ राजा १९:१९–२२

१. जब एलीयाह को एलीशा जैसा दोस्त और शिष्य मिला तब उनको कैसे महसूस हुआ ?

२. एलीयाह का साहस वापस बढ़ जाने के बाद ही परमेश्वर ने उनके जीवन में एलीशा को डाला ,ऐसा क्यों ?

जीवन में उपयोग : आज आप निराशाओं से कैसे निपट रहे हैं? आपने जो सीखा वह दूसरों के साथ बांटिये।

दिन बत्तीस : ''यीशु के बताए मार्ग पर चलना''

१यूहन्ना २:५–६

१. पिछले दिनों को स्मरण कीजिए । क्या आप यीशु जैसी चाल चल रहे हैं?

मरकुस १:२१–२८

१. यीशु की शिक्षा की खासियत क्या थी?

२. क्या आप दूसरों को अधिकार के साथ सिखाते हैं?

मरकुस १:२९–३४

१. उस रात यीशु कितने देर तक काम कर रहे थे?

२. क्या वे थके हुए थे?

३. उन्होनें इतना परिश्रम क्यों किया?

४. क्या आप कठिन परिस्थितीयों में भी चुनौतियों का सामना कर स्वयं को तकलीफ देकर दूसरों तक यीशु का सुसमाचार पहूंचाने की इच्छा रखते हैं ?

मरकुस १:३५

१. गौर कीजिये कि अगले दिन यीशु कितनी जल्दी उठे। क्यों ?

२. यीशु के समान क्या आप प्रार्थना करने के लिये उतावले हैं?

मरकुस २:१३–१७

१. यीशु किन–किन लोगों के मित्र बने? क्यों?

२. आप पापियों और अविश्वासियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं?

३. सुसमाचार फैलाने के लिये क्या आप नए मित्र बना रहे हैं?

जीवन में उपयोग : आज के इस अभ्यास से कौनसी दो बातों में आप यीशु की नकल करेंगे? लिखिये और कीजिये।

दिन तेतीस : ''यीशु के समान चमकना''

फिलिप्पियों २:१४–१६

१. आप **जीवन के वचनों** को लोगों के सामने कैसे प्रस्तुत करेंगे?

२. हमारे आस–पास के लोगों के सामने हमें किस प्रकार का उदाहरण दिखाना चाहिये?

३. हाल ही में आपने किन बातों के बारे में शिकायत की या कुड़कुड़ाया? आप कैसे परिवर्तन कर सकते हैं?

१कुरिन्थ ९:१९–२३

१. आप कैसे सब के दास बन सकते हैं? उदाहरण दीजिये ।

२. लोगों को बचाने की मदद करने के लिये आप किन क्षेत्रों में उनके जैसे बन सकते हैं?

भजन संहिता १२६:६

१. शिष्य बनाने जाते समय हमें **रोकर** क्यों जाना चाहिये?

२. जो यह करते हैं उनके लिये कौनसा वादा है?

दानियेल १२:३

क्या आप बुध्दिमान बन रहे हैं?

जीवन में उपयोग : प्रार्थना कीजिये कि जब आप लोगों के साथ अपना विश्वास बांटें तब आपके पास एक ऐसा मन हो जो पूरी गहराई से लोगों से सच्चा प्रेम करे।

दिन चौंतीस : ''सुधार को स्वीकारना''

गलातियों २:११–१६

१. पतरस का पाप क्या था?

२. पौलुस ने सब के सामने उनकी गलती क्यों बताई? (**१ तिमुथियुस ५:२०, मत्ती १८:१५**)।

२कुरिन्थियों ७:६–१३

१.पौलुस ने कुरिन्थियों की गलती क्यों बताया और चुनौती क्यों दी?

२. परमेश्वर के अनुसार सुधार के प्रती आपकी प्रतीक्रीया कैसी होनी चाहिये?

३. हाल ही में क्या किसीने आपको आपकी गलती बताई?

४. आपका जवाब क्या था?

५. क्या वे आपके जवाब से प्रोत्साहित हुए?

गलातियों ६:१–५

१. किस बाध्यता के कारण हमें एक दूसरे की मदत करनी चाहिये?

२. घमण्ड आपको सुधार का स्वीकार करने से कैसे रोक सकता है?

३. अपनी तुलना दूसरों से करना खतरे की बात क्यों है?

नीतिवचन १५:३१–३२/१६:१८

१. किस शास्त्र में आपका वर्णन है?

जीवन में उपयोग : आपके मार्गदर्शन से सलाह कीजिये कि आप सुधार को कैसे स्वीकारें। क्या आपको इस क्षेत्र में परिवर्तन करना है?

दिन पैंतीस : ''उस नाम के योग्य''

१पतरस ४:१२–१९

१. यीशु के लिये आपने कौनसे अपमान और दुख सहे?

२. आपका स्वभाव कैसा होना चाहिये?

३. सताव के समय शैतान क्या चाहता है, कि आप क्या सोचें और क्या करें?

इब्रानियों १०:३२–३४

१. क्या आपने इस प्रकार की परेशानियों का सामना किया है?

२. जो मसीही नीन्दा और दबाव से गुजर रहे हैं उनको प्रोत्साहन देने के लिये आप क्या कर रहे हैं?

इब्रानियों ११:३२–४०

१. क्या आपने यीशु के लिये, शेर, आग, तलवारों, सैनीकों, यातनाओं, चाबुक की मार, कैद, ज़ंजीरों या फिर देश–निकाला इन चीजों का सामना किया है? परमेश्वर इन लोगों के बारे में क्या सोचते हैं ?

२कुरिन्थियों ११:२३–२९ रोमियों ८:१८

१. मसीह के लिये पौलुस ने किस प्रकार का जीवन जीया?

२. अपने दु:ख सहन के बारे में उसे कैसा महसूस हुआ?

३. एक मसीह होने के नाते आप आनन्दित हो या कुड़कुड़ा रहे हो?

जीवनमें उपयोग : क्या यीशु यह कहेंगे कि आप एक मसीह कहलाने के योग्य हो?

दिन छत्तीस : ''एक आशा और एक भविष्य''

१. क्या आपको अपने भविष्य की चिन्ता है?

२. आपकी आशाएं और आपके डर क्या हैं?

यिर्मयाह २९:११–१३

१. जो लोग परमेश्वर को सम्पूर्ण मन से ढूंढते हैं परमेश्वर उनसे क्या वादा करते हैं? आप परमेश्वर की खोज कर रहे हैं या किसी और चीज की?

भजनसंहिता ३७:३–४

१. आपके दिल की इच्छाएं क्या हैं? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपकी इच्छाओं को पूरा करेंगे?

भजनसंहिता १६:५–८

१. क्या आप अपने जीवन के बारे में ऐसा महसूस करते हैं? क्यों?

१तिमुथियुस ६:६–१०

१. किस चीज से आपको संन्तुष्ट होना चाहिये ?

२. पैसों और दूसरी चीजों की इच्छा आपके जीवन को क्या बना देगी?

३. कोई व्यक्ति कैसे विश्वास से गुमराह हो जाता है?

४. और कौनसी इच्छाएं हमें गुमराह करती हैं?

रोमियों ८:३१–३२

१. परमेश्वर ने आपके प्रती अपने प्रेम का सबूत कैसे दिया है?

जीवन में उपयोग: यदि आपके जीवन में परेशानी या असन्तुष्टता है तो कबूल करें कि यह विश्वास की कमी के कारण है, और इनमें से एक वचन याद कर लो ताकि यह आपको 'परमेश्वर विश्वासयोग्य है' यह याद दिलाता रहे।

दिन सैंतीस : '' देने का अनुग्रह''

लूका २१:१–४

१. इस विधवा के उदाहरण से आप क्या सीखते हैं ?

२. तीन कारणों के बारे में सोचो जिनसे उसे **कन्जूस** कहा जा सकता हो।

१तिमुथियुस ६:१७–१९

१. यदि आपके पास पैसा हो तो आपको जीवन कैसे जीना चाहिये?

२कुरिन्थियों ९:६–१५

१. क्या आपने उदारता से परमेश्वर को देने का नीर्णय बनाया है?

२. क्या आप हर बार वही रक्कम दे रहे हैं?

३. जो उदारता से देते हैं परमेश्वर उनसे क्या वादा करते हैं?

४. आपके देने से लोगों को, परमेश्वर को और आप को क्या लाभ होता है?

जीवन में उपयोग : यदि आप यह सोचते हैं कि आपका अब तक का दान उदारता या विश्वासयोग्य नहीं था, तो आप निर्णय कीजिये की आप कितना देंगे और परमेश्वर के आगे अपने इस वादे को पूरा करें।

दिन अड़तीस : ''जाओ और शिष्य बनाओ''

२ तीमुथियुस २:१–७

वचन २ की तुलना मत्ती २८:१९–२० से करो।

१. यीशु का दुनिया भर में प्रचार करने का तरीका क्या है?

२. एक विश्वासयोग्य शिष्य कैसा होता है? क्या आप दूसरों से समय पर मिलने, समय के पाबन्द और नीर्देषों का सही रुप से पालन करने में विश्वासयोग्य हैं?

३. एक सैनिक, एक खिलाड़ी और एक किसान के उदाहरण पर चलने में आप कैसे हैं? स्पष्टता से बताओ।

४. क्या तिमुथियुस और पौलुस लोगों को पढ़ाने के लिये आपको चुनते ? क्यों ?

१कुरिन्थियों ९:२४–२७

१. मसीह जीवन किस तरह एक दौड़ में दौड़ने के समान है?

२. अगर एक खिलाड़ी कसरत नहीं करे या वह अपने शरीर को पीड़ा न दे तो क्या होता है?

३. एक शीष्य होने के नाते यदि आप अपने को प्रशीक्षण और अनुशासन में न रखें तो क्या हो सकता है?

जीवन में उपयोग: एक सूची बनाओ कि आप अपने प्रार्थना, पवित्रशास्त्र अध्ययन, प्रचार करने और वक्त का सही उपयोग करने में अपने आपको कैसे अनुशासित रख सकते हैं। अपने मार्गदर्शक से बात करें।

दिन उनतालीस : ''विश्वास ही विजय है''

मरकुस २:१–१२

१. यह मनुष्य यीशु को देखने पर क्यों तुला हुआ था?

२. यीशु को न देखने के लिये इस मनुष्य के पास क्या कारण थे? तीन कारण दीजिये ।

३. इस व्यक्ति के किस बात से यीशु प्रभावित हुए ?

४. आप इस व्यक्ति जैसे कैसे बन सकते हैं?

मरकुस ५:२१–४३

१. याईर और उस लहू बहनेवाली रोगी स्त्री में क्या समानताएँ थी?

२. यीशु ने दोनों की मदद क्यों की?

३. जब हमें मदद की जरूरत पड़ती है तो हमारा सम्पूर्ण रीति से सिर्फ यीशु पर भरोसा रखना क्यों महत्वपूर्ण है?

४. किन क्षेत्रों में आपने परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा नही किया ?

५. क्या आप मदद के लिये किसी और के पास गए?

मरकुस ६:१–६

१. इस जगह में क्या चीज थी जो अलग थी? क्यों?

२. क्या यीशु आपके विश्वास पर या विश्वास की कमी पर आश्चर्य चकित हैं? क्यों?

इब्रानियों ११:५–६

१. परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये विश्वास क्यों महत्वपूर्ण है?

जीवन में उपयोग : आपके (या किसी और के)जीवन में कौनसे क्षेत्र में आपको परमेश्वर के मदद की जरूरत है। सब बातों की सूची बनाकर लगातार प्रार्थना कीजिये।

दिन चालीस : ''अच्छे दिल, अच्छे कर्म, अच्छी चीजें''

लूका ८:१५

१. क्या आपका दिल ऐसा है? **२.** आपके जीवन से क्या उत्पन्न हो रहा है?

फिलेमोन ४–७

१. फिलेमोन ने कौनसी ऐसी तीन बातें की जिससे हम यह जान पाते हैं कि उसका दिल अच्छा था?

२पतरस १:५–११

१. मसीही जीवन में बढ़ते रहने के लिये आपको क्या करना चाहिये ?

२. सद्‌गुण, धीरज, भाईचारे का स्नेह का वर्णन कीजिये।

३. यदि आपकी प्रगती रूक जाए तो क्या होगा?

४. वचन १० का अर्थ क्या है?

३यूहन्ना २–६

१.यदि एक भाई या बहन आपसे मिलने आएं तो वे आपके जीवन के बारे में क्या बातें कहेंगे ?

२. आपका आज तक का मसीही जीवन आपको कैसे लगता है?

३. क्या आप प्रगती कर रहे हैं?

४. किन क्षेत्रों में आपको मदत की जरूरत है?

जीवन में उपयोग : अब जब कि आपने ४० दिन का अपना अभ्यास पूरा कर लिया है, अब आप आगे किस चीज का अध्ययन करेंग यह तय कर एक योजना बनाओ। जिनको आप मसीही बनने में मदत कर रहें हैं उनके साथ यह अभ्यास बांटिये। प्रगति करते रहिये।